ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल

वर्ष 43, अंक 49 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 2 नवम्बर, 2020 से रविवार 8 नवम्बर, 2020
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सम्पादकीय

दीपावली : त्यौहार भारत का - दिवाली विदेशी कम्पनियों की?

पिछले साल डोमिनोज पिज्जा का एक विज्ञापन हमारे टीवी चैनलों पर बड़े धडल्ले से चल रहा था। इसमें कुछ इस तरह दिखाया गया था कि जैसे सभी हिन्दू नॉनवेज खाते हैं बस फर्क इतना है कि कुछ लोग इस काम को छिपकर करते हैं। और इस बात का डोमिनोज पिज्जा को पता चल गया इसलिए डोमिनोज पिज्जा ने विज्ञापन परोसा था कि इस दिवाली मिठाई नहीं डोमिनोज का नॉनवेज पिज्जा खाइए।

हर वर्ष की तरह एक इस वर्ष भी दीपावली आने वाली है और ये समस्त विश्व के हिन्दुओं का यह बड़ा उत्सव है। इस दिन भगवान श्री राम जी अयोध्या पहुंचे थे। अत: सब इस त्यौहार को मिठाई बांटकर, मोमबत्ती बांटकर, दिए जलाकर, सेलिब्रेट करते हैं लेकिन हमारी इन खुशियों को विदेशी कम्पनियां कैसे भुनाती हैं, अचानक से खबर बना दी जाती है कि 7 राज्यों में मिलावटी मावा सप्लाई करने वालों से 1600 किलो नकली मावा पकड़ा गया, नकली मावे को खाद्य एवं सुरक्षा विभाग के अधिकारियों द्वारा नष्ट कर दिया गया। मिलावटी मिठाई बनाने के लिए देहरादून लाया जा रहा 3 कुंतल मिलावटी मावा पकड़ा।

ग्रेटर नोएडा से पुलिस ने शुक्रवार को 50 कुंतल नकली मावा पकड़ा, दीपावली के दौरान यहां से बड़ी मात्रा में नकली मावा दिल्ली सप्लाई किया गया था। राजस्थान में पकड़ा गया नकली मावा बनाने वाला गिरोह, भोपाल में दो हजार लीटर नकली दूध बरामद, दिवाली पर मिठाई बनाने के लिए किया जाना था इस्तेमाल। अब यहाँ एक ब्रेक लिया जायेगा और तब आपके सामने विज्ञापन आने शुरू हो जायेंगे।

सिर्फ इतना ही नहीं इसके अलावा पेप्सी, कोक, पिज्जा के अलावा अनेकों कम्पनियां अपना माल बेचती हुई कहती हैं कि इस दिवाली अपनों के साथ त्यौहार के संग कुछ मीठा हो जाए। इसके बाद फिर वही खबरें हलवाई के यहाँ से नकली मिठाई

.....दीपावली आने पर विभिन्न समाचार चैनलों पर एक युद्ध का शंखनाद कर दिया जाता है कि मिठाई ना खायें, यह मिठाई जहरीली है, यह मिठाई अस्पताल पहुंचा देगी और दूसरी ओर विदेशी कंपनियों के उत्पादों के विज्ञापन की आवृति और तीव्रता बढ जाती है। इन दोनों को मिला कर यदि विश्लेषण करें तो लगता है कि यह भारतीय उपभोक्ता को बरगलाने का प्रयास है, जिसमे एक ओर उसे भय दिखाया जाता है कि वो भारतीय बाजारों मे बनने वाली मिठाई को ना खरीदें और दूसरी ओर विदेशी कंपनियां इन्हीं चैनलों पर प्रचार कर उपभोक्ता के मन में पैदा किये गये भय को अपना सामान बेचने के लिये प्रयोग करते हैं। क्योंकि इन कंपनियों के उत्पाद स्वाद और मूल्य में भारतीय मिठाईयों के आगे कहीं नही ठहर सकते, अत: उपभोक्ता के मन में भय पैदा करने की रणनीति बना कर समाचार चैनलों को एक टूल के रूप मे अपनी योजना में शामिल किया जाता है।.....

बरामद, केमिकल मिला खोया बेचते दो बदमाश धरे गये, ये धरा वो पकड़ा गया। और फिर विज्ञापन जिसमें दिवाली के लिए कुरकुरे हैं, मैगी है और पिज्जा या चाकलेट हैं। ये सब दिखाने का मतलब है कि आम हिन्दू की सोच को बदलना, उसे ये बता देना कि उसके आस-पास जो मिठाई की दुकान हैं या जो दूध लेकर घर में कुछ बनाना चाह रहा है सब नकली और केमिकल युक्त है, असली चीज तो विदेशी कम्पनियों के पास है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

सुप्रसिद्ध गीतकार, ऋषि भक्त, भजन सम्राट
पं. सत्यपाल पथिक जी का देहावसान
सम्पूर्ण आर्यजगत में शोक की लहर

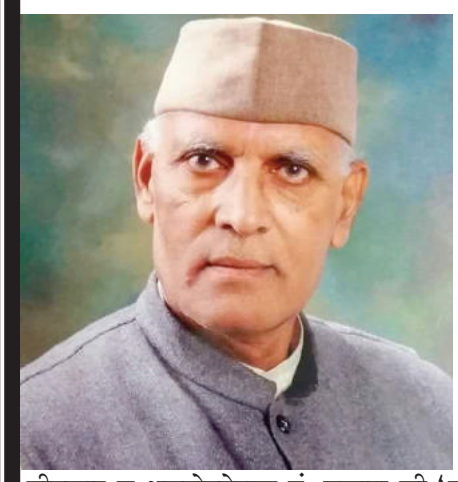

आर्यजगत के सुप्रसिद्ध गीतकार, ऋषिभक्त, भजन सम्राट पं. सत्यपाल पथिक जी का गुरुवार 22 अक्तूबर, 2020 को कोराना से संक्रमित होने के कारण अमृतसर के एक हस्पताल में प्रात: 9:15 बजे लगभग 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 25 अक्तूबर को सम्पन्न हुई।

पं. सत्यपाल पथिक जी ने आर्य गीतकार व भजनोपदेशक पं. प्रकाश जी 'कविरत्न', कुंवर सुखलाल जी 'आर्य मुसाफिर', पं. देशराज आर्य जी, पं. नन्द लाल आदि आर्य कवियों की प्रेरणा से 1956 में भजन लिखना प्रारम्भ किया था। आर्यसमाज के हर उत्सव में पंण्डित जी का कोई न कोई भजन अवश्य ही गायन व श्रवण किया जाता है। वे अपने पीछे चार सुपुत्रों एवं चार सुपुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

आपके इस प्रकार अचानक चले जाने से आर्यजगत की महान क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति हो सकना कठिन है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसन्देश परिवार एवं समस्त आर्यजगत् की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

महाशय धर्मपाल	सुरेशचन्द्र आर्य	प्रकाश आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य
संरक्षक	प्रधान	मन्त्री	प्रधान	महामन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा			दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा	

।।ओ३म्।।
दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों व आर्य संस्थाओं की ओर से
137 वें
महर्षि दयानन्द सरस्वती
निर्वाण दिवस
की पूर्व संध्या पर भव्य आयोजन केवल आर्य संदेश टीवी पर
शुक्रवार, 13 नवम्बर 2020
सायं - 4:30 बजे से सायं 6:30 बजे तक
इस बार यह समारोह कोरोना के चलते रामलीला मैदान में आयोजित नहीं किया जाएगा।
इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण केवल
आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
निवेदक
महाशय धर्मपाल, प्रधान, 011-25937341
सुरेन्द्र कुमार रैली, वरिष्ठ उपप्रधान, 9810855695
अरुण प्रकाश वर्मा, कोषाध्यक्ष, 9810086759
सतीश आर्य, महामन्त्री, 9313013123
आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली राज्य (पंजी०)
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

वेद-स्वाध्याय

श्रेष्ठ सुख दो

विश्वेषामदितिर्यज्ञियानां विश्वेषामतिथिर्मानुषाणाम्।
अग्निर्देवानामव आवृणानः सुमृळीको भवतु जातवेदाः।।-ऋ० 4/1/20
ऋषिः-**वामदेवः।।** देवता-**अग्निः।।** छन्दः-**स्वराट्पङ्क्तिः।।**

शब्दार्थ - अग्नि **विश्वेषाम्** = सब **यज्ञियानाम्** = यजनीयों का, देवों का **अदितिः** = अखण्डित निवास-स्थान है, या माता है और **विश्वेषाम्** = सब **मानुषाणाम्** = मनुष्यों का **अतिथिः** = अतिथि है, आता हुआ मेहमान है। **अग्निः** = वह अग्नि **देवानाम्** = देवों के **अवः** = रक्षण-तृप्ति आदि फल को **आवृणानः** = स्वीकार करता हुआ **जातवेदाः** = और अभीष्ट ऐश्वर्यों से युक्त हुआ-हुआ [हमारे लिए सदा] **सुमृळीकः** = उत्तम सुख देनेवाला **भवतु** = हो।

विनय - क्या तुम जानते हो कि हम मनुष्य जो देवों का यजन करते हैं और उसके बदले में ये देव हम मनुष्यों को इष्ट-फल प्रदान करते हैं, यह सब क्योंकर होता है? हम मनुष्यों का देवों के साथ जो यह यज्ञिय सम्बन्ध जुड़ा है, उसका जोड़नेवाला कौन है? यह अग्नि है, जातवेदा है। इस प्रयोजन के लिए यह अग्निदेव जहाँ एक ओर सब देवों का अदिति है, वहाँ दूसरी ओर सब मनुष्यों का अतिथि हुआ है। जहाँ यह सब यज्ञियों, यजनीयों, देवों का अखण्डित निवास-स्थान है, उनकी माता है, वहाँ यह हम मनुष्यों के उपकार के लिए स्वयं यजनीय-पूजनीय अतिथि होकर हमारे पास भी आया हुआ है। इस अतिथि-रूप से यह हमारा हवि ग्रहण करता है और अदिति-रूप से यह उसे देवों को पहुँचाता है और फिर जो ये देवगण प्रतिफल में हमारे लिए 'अवः' देते हैं, रक्षा एवं तृप्ति आदि भेजते हैं, उसे स्वीकार करता हुआ यही अग्नि 'जातवेदा' होकर हम मनुष्यों को अभीष्ट सुख पहुँचाता है। इस समय इसका नाम जातवेदा इसलिए होता है चूँकि तब इसमें देवों द्वारा प्रतिफल में आया हुआ 'वेदस्' अर्थात् अभीष्ट ऐश्वर्य उत्पन्न हो चुका होता है। यह प्रक्रिया है जिससे कि यजन द्वारा हमें अभीष्ट फल, सुख, शान्ति, समृद्धि आदि प्राप्त होते हैं। यह अग्निदेव ही है जिसके द्वारा 'हम देवों को भावित करते हैं और देव हमें भावित करते हैं एवं परस्पर भावित करते हुए हम परम कल्याण की ओर जा रहे हैं।' देखो, यह सब अग्निदेव की महिमा है। उपनिषदों में इसकी महिमा प्राणाग्नि आदि नाम से बहुत-बहुत गाई गई है। निःसन्देह इस अग्निदेव की जितनी महिमा गाई जाए उतनी थोड़ी है।

हे परमेश्वर! हे अग्नियों के अग्ने! तुम हमपर ऐसी कृपा करो जिससे ये महिमाशाली अग्निदेव हम यजनशील पुरुषों के लिए सदा उत्तम सुख देनेवाले रहें, सदा श्रेष्ठ सुख प्रदान करते रहें।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

बाल बोध

विद्यार्थी जीवन की आवश्यक बातें

.....जो सूर्योदय के पश्चात् अथवा दिन में सोता है, उस सोने वाले के तेज को उदय होता हुआ सूर्य हर लेता है। मनुष्य सुख-दुःख, पुष्टि-दुर्बलता, ज्ञान-अज्ञान और जीवन-मृत्यु निद्रा के अधीन हैं। जागृत अवस्था में शरीर, मन तथा इन्द्रियों के कार्य करते हुए श्रान्त हो जाने से और तमोगुण की वृद्धि होने के कारण निद्रा आती है। उस समय दिन भर कार्य करने से क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की पूर्ति और पुष्टि होकर वे पुनः कार्यक्षम बन जाती हैं। रक्त में एकत्रित कार्बनडाइआक्साइड, यूरिक ऐसिड आदि विजातीय तत्वों का निष्कासन श्वसन-तन्त्र और उत्सर्गी तन्त्र द्वारा होकर रक्त शुद्ध हो जाता है। मन तथा इन्द्रियां पुनः स्फूर्ति से भर जाती हैं। व्यक्ति अपनी खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त कर लेता है।.....

गतांक से आगे -

प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी रुचि, देशकाल, वातावरण, आहार, निद्रा, प्रकृति व आयु के अनुसार नियमित व्यायाम करना चाहिए। दौड़ एवं भ्रमण करना भी उत्तम व्यायाम हैं। लेकिन ध्यान रहे कि जो भी व्यायाम किया जाए वह प्रतिदिन निश्चित समय पर नियमित रूप से करना चाहिए। वरना लाभ के स्थान पर हानि होती है।

औषध नहीं व्यायाम् समाना।
व्यय नहीं तनिक अरु लाभ महाना।।

शरीर की शुद्धि (स्नान) : सदैव ठंडे पानी से नहाना चाहिए। (विशेष अवस्था को छोड़कर) भूलकर भी गर्म पानी से स्नान न करें। महर्षि बाग्भट्ट ने स्पष्ट बतलाया है कि गर्म जल से सिर धोने से नेत्रों की ज्योति कम हो जाती है, केश निर्बल हो जाते हैं और मस्तिष्क को बहुत हानि पहुंचती है।

इन्द्रियों की शुद्धि : शरीर की शुद्धि के साथ ही मन की शुद्धि भी अति आवश्यक है। शरीर के आभ्यान्तरिक मलों के निष्कासन के लिए शुद्धि क्रिया, कपालभाति, नाड़ी-शोधन प्राणायाम् तथा नेति, धौति और शंख-प्रक्षालन का अभ्यास करना ठीक होगा।

स्वाध्याय : विद्यार्थी को नियमपूर्वक संध्या समय या किसी भी समय कम से कम 30 मिनट स्वाध्याय के लिए अवश्य निकालने चाहिए। वेद-शास्त्र, रामायण-महाभारत, गीता विश्व के महान चिन्तक, महापुरुषों की जीवनियां या आत्मकथाएं आदि अच्छी पुस्तकें पढ़नी चाहिए।

"स्वाध्यायान्मा प्रमदः।" अर्थात् स्वाध्याय में कभी प्रमाद नहीं करना चाहिए। अपने जीवन को सफल, और महान बनाने के लिए प्रतिदिन स्वाध्याय कीजिए। स्वाध्याय दो प्रकार से होता है एक-अच्छे ग्रन्थों का अध्ययन करना तथा दूसरा स्वयं का निरीक्षण करना।

भोजन : सबसे महत्वपूर्ण है समय पर नाश्ता व भोजन ग्रहण करना। स्वादवर्धक नहीं स्वास्थ्यवर्धक भोजन करना। शरीर की आवश्यकतानुसार भोजन करना, अपनी प्रकृति व भूख के अनुसार भोजन करना। खूब चबा-चबाकर खाना कहावत है न 'Eat water and drink food' इतना ही नहीं एक अनुभवी ने लिखा है कि हम जितना आवश्यकता से अधिक भोजन करते हैं उसमें से "One third nourishes our body and two third nourishes the doctors." अर्थात हमें भूख से अधिक खाना नहीं चाहिए। क्योंकि "the more you eat, the sooner you die." अतएव हमें उसी प्रकार भोजन करना चाहिए "Live like a rich man, eat like a poor man."

इस प्रकार हमें स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना चाहिए। बिना भूख भोजन करना बीमारियों को बुलाना है। Eat to live, do not to eat. हम इस भुलावे में भी न रहें कि महंगा भोजन स्वास्थ्यप्रद होगा। 'Cheapet and the simplest food is the best food' सस्ती व साधारण खुराक या भोजन ही उत्तम है। **स्वस्थ कौन? मित भुक्, ऋतु भुक्।** अर्थात स्वस्थ वह है जो अपनी प्रकृति के अनुकूल, अपनी भूख से कुछ कम और जो ईमानदारी की कमाई या फिर ऋतु के अनुकूल भोजन करें। इस प्रकार हमने यहां उत्तम स्वास्थ्य के लिए कुछ जानकारियां प्राप्त की, इनसे लाभ उठाकर अपने आपको निरोगी रखें क्योंकि इसीको सबसे उत्तम धन माना गया है।

Health is wealth या फिर 'पहला सुख निरोगी काया'।

निद्रा : "उद्यन्त्सूर्य इव सुप्तानां द्विषतां वर्च आददे।" -*अथर्ववेद 7/13/2*

जो सूर्योदय के पश्चात् अथवा दिन में सोता है, उस सोने वाले के तेज को उदय होता हुआ सूर्य हर लेता है। मनुष्य सुख-दुःख, पुष्टि-दुर्बलता, ज्ञान-अज्ञान और जीवन-मृत्यु निद्रा के अधीन हैं। जागृत अवस्था में शरीर, मन तथा इन्द्रियों के कार्य करते हुए श्रान्त हो जाने से और तमोगुण की वृद्धि होने के कारण निद्रा आती है। उस समय दिन भर कार्य करने से क्षतिग्रस्त कोशिकाओं की पूर्ति और पुष्टि होकर वे पुनः कार्यक्षम बन जाती हैं। रक्त में एकत्रित कार्बनडाइआक्साइड, यूरिक ऐसिड आदि विजातीय तत्वों का निष्कासन श्वसन-तन्त्र और उत्सर्गी तन्त्र द्वारा होकर रक्त शुद्ध हो जाता है। मन तथा इन्द्रियां पुनः स्फूर्ति से भर जाती हैं। व्यक्ति अपनी खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त कर लेता है। संक्षेप में निद्रा हमारी निष्क्रीय हुई बैटरी को पुनः सक्रिय (चार्ज) करके हमें नया जीवन प्रदान करती है। निद्रा के लिए कुछ नियम हैं।

रात को निश्चित समय पर सोना, सोने का स्थान खुला व हवादार हो, वस्त्र ढीले हों। आधी रात से पूर्व की एक घण्टे की निद्रा उसके पश्चात की तीन घण्टे के समान है। 'One hour sleep before midnight is worth three afterwards.' भोजन करते ही न सोएं, मुंह ढककर न सोएं, सोने से पहले मूत्र त्याग अवश्य करें, सिर-हाथ पैर आदि अच्छी तरह धोकर-पोंछकर सोना चाहिए। सोते समय तनाव मुक्त होकर सोएं, सोते समय उत्तर दिशा की तरफ सिर करके कभी न सोएं, पूर्व या दक्षिण में सिर रहे तो अच्छा है।

आयुर्वेद के ग्रन्थों में कहा है- **"पाक् शिरः शयीताः"** दक्षिण की ओर पैर करके कदापि नहीं सोना चाहिए। क्योंकि मनुष्य के मस्तिष्क में एक ऐसी शक्ति है जिसे आंग्ल भाषा में मैगनेट (Magnet) कहते हैं। इस शक्ति का धड़कने वाला भाग मनुष्य की चोटी की ओर होता है। तो उसकी गति नियम संख्या की अपेक्षा बढ़ जाती है। फलस्वरूप नाना प्रकार के विकार उत्पन्न हो जाते हैं। सोने से पहले भगवान को स्मरण करके, जीवन में कर्म करने के संकल्पों को दोहराना चाहिए।

सुव्यवस्था : इसके अतिरिक्त विद्यार्थी जीवन सुव्यवस्थित होना चाहिए। यदि जीवन अस्त-व्यस्त हुआ तो मन अशान्त व तनावयुक्त हो जाएगा। सुव्यवस्था ही जीवन में पूर्ण शान्ति प्रदान करती है।

- शेष पृष्ठ 7 पर

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दुनिया के प्रत्येक देश में मजहबी कट्टरता का बढ़ता खतरा

फ्रांस पर फिर जिहादी हमला

....इस्लामवादी किसी देश या भूमि के पलायन करते है चाहें उसमें विजय की भावना हो या भय की हाथों में हथियार या आँखों में आंसू फिर भी इस्लाम अपने साथ जरुर लेकर जाते हैं, उदहारण के लिए सीरियाई संकट के समय सीरिया से लाखों की संख्या में शरणार्थी यूरोप के कई देशों में पहुंचे थे। भले ही इनके चेहरों पर दर्द रहा हो, आँखों में आंसू हो, किन्तु इसके उपरांत भी ये लोग अपने साथ इस्लाम लेकर पहुंचे, किसी पूर्वाग्रह के चलते लोग इस बात पर ध्यान नहीं देते। परन्तु इस्लाम के साथ जुडी हुई तमाम समस्याओं जैसे बहुविवाह, नकाब और बुर्का, महिला-पुरुष गुप्तांगों का खतना, नमाज, अजान, रमजान, तहर्रुश यानि यौन हमला व इसके अलावा अन्य मतों संस्कृतियों और सभ्यताओं के विरुद्ध नफरत अपनी शरिया अदालतें, इस्लामवाद और जिहादी हिंसा लेकर जाते है। मानवीय आधार पर जैसे ही कोई देश शरण देता है तो इन्हें बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा और रोजगार के विपरीत मदरसों और मस्जिदों की जरूरत महसूस होने लगती हैं।.....

साल 2022 तक फ्रांस का इस्लामीकरण हो जाएगा। देश में मुस्लिम राष्ट्रपति होगा और महिलाओं को नौकरी छोड़ने के लिए बाध्य किया जाएगा। विश्वविद्यालयों में कुरआन पढ़ाई जाएगी। बुर्का फ्रांस की संस्कृति बन जायेगा, एक से ज्यादा शादी करना कानूनी हो जाएगा, चर्च की घंटियों की जगह मस्जिदों की मिम्बर से अजान हो रही होगी, ये कल्पना साल 2015 में प्रकाशित प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखक मीशेल वेलबेक के उपन्यास सबमिशन में की गयी थी।

अब फ्रांस में एक स्कूल शिक्षक सैम्युएल पैटी की 18 वर्षीय - एक आतंकी ने गर्दन काटकर हत्या कर दी। उसने सिर कलम करने का वीडियो भी बनाया और इसके बाद उस गंभीर क्लिप को ऑनलाइन पोस्ट भी किया। हालाँकि हत्यारे आतंकी को पुलिस ने गोली मार दी। भारतीय वामपंथी पत्रिका के हिसाब से कहें तो एक 18 साल के मासूम गरीब छात्र को समझाने के बजाय गोली मार दी गयी।

असल में एक होती है हत्या और दूसरी होती है आत्महत्या। अगर भारत की बात करें तो पिछले 70 से 75 वर्षों में भारत ने दो बार आत्महत्या की, एक बार 1947 में जब मजहब के नाम पर बंटवारा हुआ और मजहबी लोग भारत में ही रह गये। दूसरी आत्महत्या 1971 में हुई जब करोड़ों बंगलादेशी शरणार्थी भारत में घुस कर बैठ गये और बांग्लादेश की मुक्ति के बाद उन्हें वापिस नहीं भेजा जो आज असम, बंगाल समेत देश भर में नासूर बनकर बैठे है।

लेकिन इस सबसे सबक न लेकर यूरोप के देशों ने लगातार आत्महत्या की, पत्रकार एरिक जेम्मूर की एक सफल पुस्तक ले सुसाइड फ्रांकाइस यानि फ्रांसीसी आत्महत्या शायद यही कहना चाहती है। शार्ली एब्दो पर हमला और कार्टूनिस्टों की हत्या ने एक तरह से यूरोप को आगाह कर दिया था, ये हमले इस बात के प्रतीक थे कि अगर कोई इस्लाम कुरान या नबी पर सवाल उठाए तो वो उसकी हत्या भी कर सकते हैं। क्योंकि शार्ली एब्दो पर हमले के बाद आतंकी अबू मुसअब ने कहा था कि हमने पैगंबर का बदला ले लिया है, ये तो खून की पहली बूंद है। अभी आगे और बाकी है। तब से लेकर अब तक अकेले फ्रांस में करीब 230 से ज्यादा लोग मारे जा चुके हैं, स्वीडन से लेकर नोर्वे, ब्रिटेन, जर्मनी स्पेन समेत समूचे यूरोप में मजहब और नबी के नाम पर सैंकड़ो लोगों को कत्ल किया जा चुका है। लेकिन विशेषज्ञ अभी भी हाथ में हेंडलेंस लेकर इस्लाम में शांति की खोज पर निकले है, जैसे कल समूचे फ्रांस में हजारों लोगों ने टीचर सैम्युएल को श्रद्धांजलि देते हुए प्रदर्शन किया। इसमें फ्रांस के प्रधानमंत्री भी शामिल हुए सबके हाथ में तख्ती थी जिस पर लिखा था मैं सैम्युएल हूं ये बिलकुल ऐसा ही था जैसे 2015 में प्रदर्शन हुआ था मैं चार्ली हूं।

दरअसल मामले को समझने के लिए थोडा सा पीछे चलें तो मई 2017, फ्रांस में चुनाव हुए थे। मुकाबला दो ध्रुवों का था। एक ओर थे इमैनुअल मैक्रों। दूसरी तरफ थी मरीन ला पैन। पिछले कई दशकों से फ्रांस ने इतना करीबी मुकाबला नहीं देखा था। मरीन के जीतने की संभावनाएं ज्यादा थीं। लेकिन जीते मैक्रों। इसका कारण था फ्रांस के लोगों को सेकुलरिज्म का कीड़ा काटने लगा था। राईटविंग को साइड दिखाकर लेफ्ट के बहकावे में आकर लोगों को उम्मीद नजर आने लगी। उन्हें लगा, मेंक्रो फ्रांस को राह दिखाएगा। वैसे ही, जैसे कभी फ्रांस की क्रांति ने दुनिया को राह दिखाई थी।

मरीन की हार का कारण था कि चुनाव के समय मरीन इस्लाम पर खूब बोलती थीं। शरणार्थियों पर बोलती थीं, फ्रांस में आकर बसने वाले बाहरियों पर बोलती थीं। मरीन का कहना था कि इस्लाम फ्रांस के लिए खतरा है। इस्लाम फ्रांस को घुटनों पर ले आएगा। उसे असहाय करके छोड़ेगा, मरीन फ्रांस के अंदर शरणार्थियों को भी नहीं देखना चाहती थीं। इसी कारण मुस्लिम वोट मेंक्रो की तरफ चले गये और मरीन हार गयी मरीन भले हार गई हों, मगर उनके उठाए मुद्दों ने दम नहीं तोड़ा। फ्रांस में ये बहस चलती रही। आतंकवादी हमलों के बाद अब एक बार फिर ये बहस तेज हो गई है।

बहस ये है कि जब इस्लामवादी किसी देश या भूमि के पलायन करते हैं चाहें उसमें विजय की भावना हो या भय की हाथों में हथियार या आँखों में आंसू फिर भी इस्लाम अपने साथ जरूर लेकर जाते हैं, उदहारण के लिए सीरियाई संकट के समय सीरिया से लाखों की संख्या में शरणार्थी यूरोप के कई देशों में पहुंचे थे। भले ही इनके चेहरों पर दर्द रहा हो, आँखों में आंसू हो, किन्तु इसके उपरांत भी ये लोग अपने साथ इस्लाम लेकर पहुंचे, किसी पूर्वाग्रह के चलते लोग इस बात पर ध्यान नहीं देते। परन्तु इस्लाम के साथ जुडी हुई तमाम समस्याओं जैसे बहुविवाह, नकाब और बुर्का, महिला-पुरुष गुप्तांगों का खतना, नमाज, अजान, रमजान, तहर्रुश यानि यौन हमला व इसके अलावा अन्य मतों संस्कृतियों और सभ्यताओं के विरुद्ध नफरत अपनी शरिया अदालतें, इस्लामवाद और जिहादी हिंसा लेकर जाते हैं। मानवीय आधार पर जैसे ही कोई देश शरण देता है तो इन्हें बच्चों को मुख्यधारा की शिक्षा और रोजगार के विपरीत मदरसों और मस्जिदों की जरूरत महसूस होने लगती हैं।

यूरोप में मुसलमानों की सबसे बड़ी आबादी फ्रांस में ही है। यहां 50 लाख से ज्यादा मुसलमान रहते हैं, फ्रांस की कुल आबादी छह करोड़ 60 लाख के करीब भले ही गणित के अनुसार यह आबादी अभी कम दिख रही हो लेकिन जिस तरह फ्रांस में चर्च के पादरियों से लेकर आम फ्रांसीसी को आतंकी हमलों का सामना करना पड़ा। उस हिसाब से यह वहां की मूल आबादी से बड़ी नजर आ रही है। नीस में ट्रक द्वारा कुचलकर सैंकड़ों के करीब लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। ऐसा नहीं है कि सारे हमले विदेशियों ने ही किए हैं, फ्रेंच बोलने वाले या फ्रांसीसी मुस्लिम नागरिक बड़ी संख्या में हमलों में शामिल रहे हैं, और ज्यादातर हमले आत्मघाती थे यानी हमलावर सिर पर कफन बांधकर ही आए थे और मारे गए। कुछ समय पहले एक वीडियो इंटरनेट पर जारी हुआ था इस वीडियो में एक फ्रेंच गाना था कि फ्रांस में रहने वाले आईएस के समर्थक फ्रांस की जड़ें हिला दें, गाने के बोल कुछ यूं थे कि सूअरों का खून बहा दो, उनकी आत्माएं मिटा दो, फ्रांस को हिला दो और फ्रांस सच में हिल रहा है, एक लाख से ज्यादा सुरक्षा बल इस वक्त देश की सड़कों पर पहरा दे रहे हैं।

अब सवाल ये है कि ऐसा क्यों होता है कि एक 18 साल का लड़का पत्रिका द्वारा छापे गये चित्र दिखाने से इतना विचलित हुआ कि उसने टीचर का सर कलम किया उसका विडियो पोस्ट किया क्यों? तो इसका कारण ये है कि उसे इतनी हिम्मत इसलिए मिली वो जानता था कि उसकी निंदा के बजाय दुनिया के डेढ़ अरब मजहबी लोग उसके इस काम की

- शेष पृष्ठ 7 पर

प्रेरक प्रसंग

इन्हें सोने दो

आर्यसमाज धारूर महाराष्ट्र का उत्सव था। श्री पण्डित नरेन्द्रजी हैदराबाद से पधारे। रात्रि में सब विद्वान् आर्यसमाज के प्रधान पण्डित आर्यभानुजी के विशाल आंगन में सो गये। इनमें से एक अतिथि ऐसा था जिसे रात्रि को अधिक ठण्ड अनुभव होती थी, परन्तु संकोचवश उसने ऊपर के लिए मोटा कपड़ा न माँगा।

प्रात:काल सब लोग बाहर शौच के लिए चलने लगे तो उस अतिथि का नाम लेकर एक ने दूसरे से कहा-उन्हें भी जगा लो सब इकट्ठे चलें। इस पर पण्डित नरेन्द्रजी ने कहा-ऊँचा मत बोलो, जाग जाएँगे। जगाओ मत, सोने दो। इन्हें रात को बड़ी ठण्डी लगी। सिकुड़े पड़े थे। मैंने ऊपर शाल ओढ़ा दिया।

ये शब्द सुनकर वह सोया हुआ व्यक्ति जाग गया। वह व्यक्ति इन्हीं पंक्तियों का लेखक था। पण्डित नरेन्द्रजी रात्रि में कहीं लघुशंका के लिए उठे। मुझे सिकुड़े हुए देखकर ऊपर शाल डाल दिया। इस प्रकार रात्रि के पिछले समय में अच्छी निद्रा आ गई, परन्तु सोये हुए यह पता न लगा कि किसने ऊपर शाल डाल दिया है।

पण्डित नरेन्द्रजी ने आर्यसमाज लातूर के उत्सव पर भी एक बार मेरे ऊपर रात्रि में उठकर कपड़ा डाला था, जिसका पता प्रात: जागने पर ही लगा। ऐसी थी वे विभूतियाँ जिनके कारण आर्यसमाज चमका, फूला और फला। इन्हें दूसरों का कितना ध्यान था!

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आपके लिए अनुपयोगी वस्त्र, जूते-चप्पल, स्टेशनरी के सामान, खिलौने आदि को जरुरतमंद लोगों तक पहुंचाने की विशेष योजना

आओ, हम जुड़ें 'सहयोग' से : सच्चे - अच्छे योग से

"सहयोग" सेवा यज्ञ हमारा
जरूरतमंदों को मिला सहारा
आओ, हाथ बढ़ाएं- सहयोगी बन जाएं

पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

सहयोग : क्या है योजना?

सहयोग एक चार अक्षरों का छोटा-सा शब्द है, लेकिन इसकी महिमा अपरमपार है। सहयोग के माध्यम से शहरों, नगरों और आदिवासी क्षेत्रों में अभावग्रस्त मनुष्यों की सेवा सहायता का एक महान अभियान गतिशील है। यह सर्वविदित है कि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा मानव सेवा के कई विशेष कार्य काफी लंबे समय से चल रहे हैं। इन सेवाकार्यों को गति देते हुए संघ के अधिकारियों ने गीरब व आदिवासी क्षेत्रों में ईश्वर की अमृत संतान मनुष्यों को बड़ी तंगहाली और बदहाली में करीब से व्यथित जीवन जीते देखा तो ज्ञात हुआ कि विश्व की छटी अर्थव्यवस्था के रूप में विख्यात भारत में आज भी लोग अपनी मूलभूत जरूरतों से महरूम हैं। तन ढांपने के लिए वस्त्र और जूते, चप्पल आदि की जरूरतें भी लोगों को रुला रही हैं। यह देखकर आर्य नेताओं को ऋषि दयानंद के महान जीवन से जुड़ी घटना याद आ गई कि किस तरह एक निर्धन मां ने अपने बच्चे के मृत शरीर से कफन को उतार कर उसे नग्न ही जल में प्रवाहित कर दिया था। इस मार्मिक घटना से ऋषि का कोमल हृदय द्रवित हो उठा और उन्होंने अपने शरीर पर वस्त्र धारण करना ही बंद कर दिया। ऋषि दयानंद के अनुयायी आर्यजनों ने महान कर्मयोगी महाशय धर्मपाल जी से निर्धन बस्तियों में और आदिवासी बंधुओं की इस पीड़ा के विषय में विचार-विमर्श कर के आदिवासी क्षेत्रों में या अन्य किसी भी स्थान पर जरूरतमंदों की पहचान कर उन्हें पुराने किंतु उपयोगी वस्त्र जूते, चप्पल, पुस्तकें, खिलौने, स्टेशनरी आदि समानों को उन तक पहुंचाने के लिए **"सहयोग"** नामक योजना का शुभारंभ किया। जो कि आज तीव्र गति से जरूरतमंद छात्रों, युवाओं और वृद्धजनों को लगातार सहयोग प्रदान कर रहा है।

कैसे बनें "सहयोग" के सदस्य?

⋆ सहयोग में सहभागिता के लिए पहला बिंदु है कि आप जिन वस्त्रों का प्रयोग नहीं करते, उन उपयोगी वस्त्रों को स्वच्छ करके, प्रेस कराके, पैकट में रखकर अपनी नजदीकी आर्यसमाज अथवा सहयोग के सेंटर पर पहुंचाएं ।

⋆ इसी तरह से आप जिन जूते, चप्पलों का प्रयोग नहीं करते वे दूसरों के काम आने लायक हों तो उन्हें पोलिश कराके उन्हें भी पैकट में रखें और वस्त्रों की तरह सहयोग के लिए सेंटर पर भेजें।

⋆ इस क्रम में आप खिलौने, पुस्तक, कॉपी, पैन, पेंसिल आदि उपयोगी वस्तुएं भी विधिवत जैसे किसी को गिफ्ट दिया जाता है वैसे ही पैक करके सहयोग के सहयोगी बनें।

इस सारे समान को सहयोग स्वयं अपनी गाड़ी द्वारा प्राप्त कर लेगा और आप सहयोग के अनन्य सहयोगी सदस्य बन जाएंगे।

निवेदन :- आधुनिक परिवेश में आर्यजनों को ऐसी विभिन्न सेवा योजनाओं को क्रियान्वित करना ही होगा, क्योंकि मानवता आर्य समाज को पुकार रही है, अन्य अनेक तथाकथित दिखावटी, बनावटी संस्थाएं सेवा के नाम पर बढ़ चढ़कर ढोंग

कर रही हैं, लोभ-लालच में भोले-भाले निर्धन लोगों कों विधर्मी बनाने पर तुली हुई हैं। अत: हमें अपने कर्तव्यों को समझना होगा और आर्य समाज की और से निरंतर सृजनात्मक कार्यो को गति देनी होगी। इसलिए आप दिल्ली अथवा एन सी आर में जहां भी रहते हैं वहीं अपने आर्य समाज में, आर्य शिक्षण संस्थान में या अपने गली-मोहल्ले में सहयोग का सेंटर बनाएं और इस अनुपम सेवा को वृहद अभियान का रूप देने में सहयोगी बनें दें।

आओ, करें सहयोग,
शुभ कर्मो का योग

अधिक जानकारी प्राप्त करने, सहयोग से जुड़ने के लिए अथवा आप द्वारा एकत्र किया गया सहयोग जरुरतमंदों तक पहुंचाने के लिए मो. नं. 9540050322 पर सम्पर्क। - ***व्यवस्थापक***

आर्यसमाज के सेवा संस्थान - अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत कार्यरत सेवा ईकाई

'सहयोग' द्वारा दिल्ली सभा के निर्देशन में यज्ञ-वस्त्र वितरण कार्यक्रम सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई 'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' का सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

दिनांक 21/10/20 को जे.जे. कॉलोनी, कन्हैया नगर दिल्ली में यज्ञ व वस्त्र वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। नवरात्र त्यौहार है मगर ये केवल भक्ति नही शक्ति का पर्व है, भारत में मातृशक्ति का क्या महत्व है उसकी शक्ति को दर्शाता एक चिन्ह है। परंतु मधुर वाणी की धनी उसी भारत देश की मातृशक्ति के मुँह से जब गाली सुनते हैं तो दु:ख होता है और विश्वजननी कही जाने वाली स्त्री जिसे आने वाली नस्लों का निर्माण करना है जब उसकी वाणी दूषित होती है तो देश के अंधकारमय भविष्य को देखकर मन कुण्ठित हो जाता है। इस विषय की गम्भीरता को समझते हुए आज हमने महिलाओं के बीच जाकर यज्ञ के माध्यम से उन्हें समझाया कि वो गालियाँ या अभद्र शब्दों का प्रयोग ना करें क्योंकि वो इस देश की भावी पीढ़ियों की निर्माता है इसलिए ये उनका दायित्व है कि ऋषि और योद्धाओं की भूमि को जन्म देने वाली भारतभूमि पर वें किसका सृजन करती हैं। यज्ञ के पश्चात् सभी को वस्त्रादि भेंट किए गए।

दिनांक 22/10/20 को जे.जे. कॉलोनी, वजीरपुर, दिल्ली में दशहरा के उपलक्ष्य में यज्ञ व वस्त्र वितरण का कार्यक्रम किया। कार्यक्रम में स्थानीय निवासियों ने हमें सहयोग दिया। यज्ञ में आई माताओं ने पूर्णाहुति के पश्चात् लोकभाषा में गीत भी सुनाया। कार्यक्रम के अंत में यहाँ के लोगों ने मासिक यज्ञ करने का आग्रह किया। सभी यज्ञ में आए हुए लोगों को वस्त्रादि भेंट किए गए।

आपका योगदान - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंद तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। कार्यालय पता है- **आर्य समाज मन्दिर, डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी, निकट फिल्मिस्तान, दिल्ली-110007**

आर्य समाज की "यज्ञ मित्र" योजना बून्दी में शुभारंभ

घरों में यज्ञ कराएगें यज्ञ मित्र

- कार्यालय संवादाता -

कोटा/बून्दी, 18 अक्टूबर। आर्य समाज द्वारा घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ अभियान के अन्तर्गत बून्दी में ''यज्ञ मित्र'' योजना का हुआ शुभारम्भ।

इस बारें में जानकारी देते हुए बून्दी के श्रीराम आर्य एडवोकेट प्रधान आर्यसमाज बून्दी, अनुराग शर्मा एडवोकेट अभयदेव शर्मा, एडवोकेट कुलदीप वधवा, श्रवणलाल धाभाई और राधेश्याम साहू को वेदमंत्र से सुसज्जित केसरिया पटका, मोतियों की माला पहनाकर व

केसरिया साफा पहनाकर सम्मानित किया गया तथा 'यज्ञमित्र' नामांकित पट्टिका प्रदान कर उनका अभिनन्दन करते हुए यज्ञमित्र के रूप में मनोनित किया गया।

इस अवसर पर प्रान्तीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा ने सभी यज्ञ मित्रों को अपने संदेश में कहा कि आमजन को यज्ञ

आर्य समाज बून्दी के वरिष्ठ कार्यकर्ता अभयदेव शर्मा एडवोकेट ने बताया कि आज आर्यसमाज राजस्थान के प्रन्तीय प्रचार प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा के हाथों बून्दी में घर-घर यज्ञ कराने की योजना के अन्तर्गत यज्ञमित्र का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के अन्तर्गत आर्य समाज ''हवन'' की महत्व से परिचित कराते हुए ये यज्ञ मित्र जानकारियां देगें तथा जो भी परिवार अपने घरों पर धार्मिक आयोजन, जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगांठ पुण्यतिथि आदि अवसरों पर यज्ञ कराना चाहते हैं वहां यज्ञ करायेगें। साथ ही उन्हें वैदिक सनातन धर्म के सिद्धान्तों से परिचित कराने के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती सचित सत्यार्थ प्रकाश भेंट करेगें। इस अवसर पर कोटा से आर्य समाज के वैदिक विद्वान पं. शोभाराम आर्य तथा महावीर नगर के मंत्री राधावल्लभ राठौर उपस्थित रहें। शांतिपूर्वक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

स्वास्थ्य रक्षा

आरोग्यता का खजाना है तुलसी का पौधा

.....आयुवैदिक औषधियों में तुलसी एक अत्यंत उपयोगी वनस्पति है। तुलसी का पौधा लगभग सभी घरों में आसानी से पाया जाता है। हालांकि कुछ लोग इस महत्वपूर्ण औषधि का प्रयोग न करके केवल इसकी पूजा में ही लगे रहते हैं, जबकि तुलसी एक ऐसी औषध है जो एक नहीं कई बीमारियों में उपयोग की जाने वाली अचूक औषधि है-जैसे हिचकी, खांसी, पित्तदोष, श्वास, वात-पित्त-कफ को संतुलित करने कों काम करती है। तुलसी से मुंह की दुर्गन्ध भी नष्ट होती है। आर्य संदेश के इस अंक में प्रस्तुत है तुलसी के गुण एवं प्रयोग। - सम्पादक

आरोग्यता का खजाना तुसली का पौधा अधिकांश घरों में पाया जाता है। तुलसी एक गुण अनेक की कहावत को चरितार्थ करती तुलसी के विषय में यहां प्रस्तुत है इसके महत्वपूर्ण लाभ।

1) प्रदूषित वायु के शुद्धिकरण में तुलसी का विलक्षण योगदान है। यदि तुलसी वन के साथ प्राकृतिक चिकित्सा की कुछ पद्धतियां जोड़ दी जाएं तो प्राणघात और दु:साध्य रोगों को भी निर्मूल करने में सफलता मिल सकती है।

2) तुलसी शारीरिक व्याधियों को दूर करती ही है, साथ ही मनुष्य के आन्तरिक भावों और विचारों पर भी कल्याणकारी प्रभाव डालती है। तुलसी के पौधे में मच्छरों को दूर भगाने का गुण है और इसकी पत्तियां खाने से मलेरिया के दूषित तत्वों का मूलत: नाश होता है। तुलसी और काली मिर्च का काढ़ा बनाकर पीने के सरल प्रयोग से ज्वर दूर किया जा सकता है।

3) निसर्गोपचारकों का कहना है कि तुलसी की पत्तियों को दही या छाछ के साथ सेवन करने से वजन कम होता है, शरीर की चरबी कम होती है, अत: शरीर सुडौल बनता है। साथ ही थकान मिटती है। दिनभर स्फूर्ति बनी रहती है और रक्तकणों में वृद्धि होती है।

4) ब्लडप्रेशर के नियमन, पाचन तन्त्र के नियमन तथा रक्तकणों की वृद्धि के अतिरिक्त मानसिक रोगों में भी तुलसी के प्रयोग से असाधारण सफल परिणाम प्राप्त हुए हैं।

5) अथर्ववेद में आता है, यदि त्वचा, मांस तथा अस्थि में महारोग प्रविष्ट हो गया हो तो उसे श्यामा तुलसी नष्ट कर देती है। तुलसी के दो भेद होते हैं-1. हरे पत्ते वाली और 2. श्याम (काले) पत्तेवाली। श्यामा तुलसी सौन्दर्यवर्धक है। इसके सेवन से त्वचा के सभी रोग नष्ट हो जाते हैं और त्वचा पुन: मूल स्वरूप धारण कर लेती है। तुलसी त्वचा के लिए अद्भुत रूप से गुणकारी है।

6) तुलसी हिचकी, खांसी, पित्त दोष, श्वास और पार्श्व-शूलको तथा वात, कफ और मुंह की दुर्गन्ध को नष्ट करती है। स्कन्दपुराण एवं पद्मपुराण के उत्तर खण्ड में आता है कि जिस घर में तुलसी का पौधा होता है, वह घर तीर्थ के समान है। वहां व्याधिरूप यमदूत प्रवेश ही नहीं कर सकते।

7) एक लड़का बचपन से ही मन्द बुद्धि का था। सोलह वर्षो तक उसके अनेक उपचार हुए, किंतु उसकी बौद्धिक मन्दता दूर नहीं हुई। तुलसी के नियमित सेवन से दो ही महीनों के भीतर उसमें बुद्धिमत्ता के लक्षण दिखाई पड़े, समय बीतने पर वह कुछ और अधिक बुद्धिशाली हो गया।

- शेष अगले अंक में

पृष्ठ 3 का शेष

फ्रांस पर फिर जिहादी ....

तारीफ करेंगे और इससे खुश होकर अल्लाह उसे जन्नत में हूरें बक्श देगा। क्योंकि इसी कल्पना की इस खुराक को आम मुस्लिम अपने बच्चों को पिला कर बड़ा करता है,

एक बार पूर्व अमेरिकी विदेश मंत्री कोलिन पावेल ने कहा था कि 11 सितम्बर की घटना को इस अनुमान से नहीं देखा जाना चाहिये कि इसे आतंकवादियों ने अंजाम दिया है। इस बात का बहाना बनाने से कि आतंकवाद बुरा है और उसका इस्लाम से कोई सम्बंध नहीं है तो कोरी बेवकूफी होगी।

तालिबान के लड़ाके सभी अत्यंत उत्साही मुस्लिम हैं जो कि अपने मजहब की ओर से इसे अंजाम दे रहे हैं। इसके लिए उन्हें मुस्लिम जगत में व्यापक समर्थन मिलता है, आज हमें सोचना होगा आतंक को वैचारिक और आर्थिक ऊर्जा कहाँ से मिल रही है? क्या ऐसा नहीं है कि इसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप वो सभी लोग शामिल है जो इस्लाम को बढ़ता देखते चाहते हैं? केवल आतंकवाद को दोष देने का अर्थ होगा कि इस्लाम को बचाना। जैसा कि पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बुश का कहना था है तो कोई उन्हें मारने के सिवा और क्या कर सकता है? हमारे पास स्वयं को अगले आक्रमण से बचाने के लिए बंदूक से अपनी रक्षा के सिवाय कोई मार्ग नहीं है। विजय के लिये कोई रणनीति नहीं है केवल तरीका है कि पहले गोली चलाकर स्वयं को क्षति से बचाया जा सके। काश ये बात यूरोप के सभी देश समझे जल्दी समझे वरना चर्च के चारों ओर मीनार खड़ी होने में समय नहीं लगेगा और फ्रांसीसी लेखक मीशेल वेलबेक के उपन्यास सबमिशन को सच साबित होने में समय नहीं लगेगा। - ***राजीव चौधरी***

सात्विक दान देकर संस्कृति रक्षा में सहयोगी बनें

महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल में इस समय में 33 बालिकाऐं अध्ययनरत हैं प्रात: 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक उनका पठन-पाठन, व्यायाम, संगीत, शस्त्र चालन और वैदिक दिनचर्या की शिक्षा दी जा रही है। ध्वनि प्रसारण (माईक) से प्रात:-सायंकाल सन्ध्या, यज्ञ होता है, गुरूकुल की आचार्या व कन्याओं के माध्यम से आसपास के क्षेत्र में प्रचार भी किया जा रहा है।

म. प्र. में पहला कन्या गुरुकुल एक वर्ष पूर्व ही स्थापित महर्षि आर्ष कन्या गुरुकुल निरन्तर प्रगति पथ पर है उसकी ख्याति अल्पावधि में ही दूर-दूर तक फैल रही है। गुरुकुल मे ही गौशाला भी संचालित की जा रही है।

अनेक अभिभावक अपनी पुत्रियों को गुरुकुल में प्रवेश दिलाने हेतु फार्म भर चुके हैं, जिन्हें आगामी सत्र में स्थान दिया जावेगा। गुरुकुल की पढ़ाई के अतिरिक्त अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, संगीत, कम्प्यूटर की शिक्षा भी दी जाती है। सनातन धर्म की रक्षा गुरुकुल और आर्यवीर दल से ही संभव है। कृपया, अपना सात्विक दान देकर सहयोग करें।

महर्षि दयानन्द आर्ष कन्या गुरुकुल समिति
बैक ऑफ इण्डिया शाखा कानड़ जि. शाजापुर म.प्र.
A/c No. 956320110000171 IFSC Code : BKID000956

- प्रकाश आर्य, मो. 9826655117
मन्त्री, मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा, भोपाल

लोक सम्पर्क कैसे बढ़ाएं?

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

.....लोगों में दिलचस्पी लें। अपने नेतृत्व को चमकाने में ही न लगे रहें। अपने तक ही सीमित रहने वाला लोक सम्पर्क से कट जाता है। लोगों की समस्याओं को पहले पूरे ध्यान से सुनें और फिर यथायोग्य उनका समाधान करें। यदि कोई कार्य आपके सामर्थ्य से बाहर का है तो विनम्रता से अपनी असमर्थता बतला दें अथवा यह कहें कि मैं इस कार्य के लिये यथासम्भव प्रयत्न करूंगा।....

गतांक से आगे -

2. आपकी सफलता इस बात पर निर्भर है कि आप द्वारा अन्याय के विरुद्ध उठाई गई आवाज में कितना दम है। यदि आप सर्वात्मना इस कार्य में जुट जाते हैं तो लोग आपको सिर पर बिठा लेंगे। लोगों को यह विश्वास हो जाना चाहिये कि आप उनके हितों के लिये जी जान से लगे हुये हैं।

3. लोगों में दिलचस्पी लें। अपने नेतृत्व को चमकाने में ही न लगे रहें। अपने तक ही सीमित रहने वाला लोक सम्पर्क से कट जाता है। लोगों की समस्याओं को पहले पूरे ध्यान से सुनें और फिर यथायोग्य उनका समाधान करें। यदि कोई कार्य आपके सामर्थ्य से बाहर का है तो विनम्रता से अपनी असमर्थता बतला दें अथवा यह कहें कि मैं इस कार्य के लिये यथासम्भव प्रयत्न करूंगा।

4. आप जिनसे मिले उनसे औपचारिक बातें न करके पूरी आत्मीयता दिखलायें। आपसे मिलकर प्रसन्नता हुई। कृपा करके अपना कार्ड, परिचय पत्र, सम्पर्क का नम्बर अवश्य देकर जायें जिससे हमारा आपका सम्पर्क बना रहे। फिर कभी आईयेगा इत्यादि बातें कह कर उसको आश्वस्त करें।

5. व्यक्तित्व की प्रस्तुति-महाभारत में आया है, अच्छे वस्त्र वाला सभा को जीत लेता है। प्रसन्न मुद्रा, सहजता से वार्तालाप, दूसरों की बातों को ध्यान से सुनना, आवश्यकता से अधिक न बोलना आदि अनेक गुण हैं जो लोगों को आकर्षित करने में बहुत सहायक हैं। इनके अतिरिक्त कुछ गुण और सीखने होंगे-

1. मैत्रीभाव- **'मित्रस्य चक्षुषाहं सर्वाणि भूतानि समीक्षे'** अर्थात् मैं सबको मित्र की दृष्टि से देखूं। आप जिससे भी मिले वह यह अनुभव करे कि आप उसी के पक्के मित्र थे।

2. दूसरों की सहायता के लिये सदा तत्पर रहें। किसी की बात को बहाना बनाकर टालें नहीं।

3. दूसरों की प्रशंसा करना सीखें। यह एक गुण ही आम को लोक प्रिय बना देगा। यदि किसी की कमी को बताकर आवश्यक है तो फिर उसकी प्रशंसा कर उसे सात्वना दें। हो सके तो सबके सामने प्रशंसा करें।

4. लोगों में जैसे आप हैं वैसा ही अपने को दिखलायें। औपचारिकताओं के चक्र में न पड़ें।

5. किसी दूसरे के कार्य में अनावश्यक हस्तक्षेप न करें। किसी ने कहा है-

बाको सीख दीजिये जाको सीख सुहाय।
सीख दई थी वानरा घर बय्या को जाय।।

6. अधिक न बोलें। अधिक बोलने वाले से लोग बचने लगते हैं। लोगों की बातों को ध्यान से सुनकर उनका सटीक उत्तर दें।

7. किसी के जन्मदिन पर बधाई देना न भूलें। इसी भाँति पर्वों के समय कार्ड भिजवाना, मोबाईल द्वारा बधाई देना तथा शोक के अवसर शोक सम्वेदना प्रकट करना आदि कार्य लोगों को आपसे जुड़े रहने के लिये बहुत आवश्यक हैं।

8. केवल अपना ही प्रचार न करें अथवा अपनी समस्याओं का वर्णन न करें। जिन कार्यों में लोगों की रूचि है उन्हीं विषयों में बातचीत करने को प्रोत्साहित करें।

9. व्यक्ति को अपना नाम सब से प्रिय होता है। लोकप्रिय बनने के लिये नाम को स्मरण रखना आवश्यक है। व्यक्ति की उपाकृति, कद काठी, वेशभूषा और बोलने के लहजे से यह समझ में आ जाना चाहिये कि अमुक व्यक्ति का यह नाम है।

10. सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि आपको भी लोगों से स्नेह भाव बनाना चाहिये। जब आप उनमें रूचि लेंगे तो वे भी आपकी ओर आकर्षित होंगे ही।

Makers of the Arya Samaj : Mahatma Hansraj

..... In 1920 Mahatma Gandhi started the Non cooperation Movement. One of the objects of this Movement was to boycott existing schools and colleges. Fiery speeches were made to the students to leave their schools and colleges. Most of them acted on this advice. The result was that some of the institutions in the Punjab had to be closed down. Then the Congress leaders made an appeal to the students of the D.A.V. College to strike. This was too much for Mahatma Hans Raj. He could not bear to see the college for which he had done so much close down. .....

Continue From Last issue

After a few months the famine disappeared. Then he found that he had still some money at his disposal. This he used for the good of the people in Gharwal in other ways. He founded scholarships for Gharwalis who wanted education. He also started a few schools there. But all these things he did after seeing things for himself.

It was in 1919 that the Ind ian Social Conference was held at Amritsar. Mahatma Hans Raj was asked to preside over it. As president he delivered a very interesting address. In it he gave a programme of work which social reformers should follow. He asked them to remove the poverty of India. "This," he said, "can be done if we do not spend too much on festivals and ceremonies. It can also be prevented if the Indians spend money on goods produced in their own country." He also deplored the absence of Brahmcharya among the Indians. "Child marriages," he said, "have made our nation weak. Tt is necessary, therefore, to abolish this system."

Then he spoke of some of the evils amongst the Hindus. He specially referred to the caste system. It had divided the Hindus into so many small groups, which had not much to do with one another. For instance, the members of one group would not dine with those of another. The members of one group also would not marry amongst the members of another group. The result was that it was very difficult to find suitable matches for young Hindus. The caste system was also responsible for preventing the Hindus from taking part in certain trades and professions.

He also referred to the depressed classes. He was very sorry to find that one third of the Hindus in India should be known as Shudras. These were treated very badly and were not allowed to mix with the high-caste Hindus. They could not worship in their places of worship. Nor could they draw water from their wells. He pleaded strongly for a better treatment of these people.

He also drew attention to the problem of widows. He regretted that they were not given their right place in society. He said that Hindu widows should be allowed to remarry. If this were done, some of them would not change their religion. At the same time, Hindu young men would not be obliged to embrace Christianity or Islam for purposes of marriage. Moreover, he criticized the present system offemale education. He thought that women should not be given the same education as men. Their education should help them in the home. He believed that social reform was very important. It was very necessary for people to give the matter their serious attention.

In 1920 Mahatma Gandhi started the Non cooperation Movement. One of the objects of this Movement was to boycott existing schools and colleges. Fiery speeches were made to the students to leave their schools and colleges. Most of them acted on this advice. The result was that some of the institutions in the Punjab had to be closed down. Then the Congress leaders made an appeal to the students of the D.A.V. College to strike. This was too much for Mahatma Hans Raj. He could not bear to see the college for which he had done so much close down.

He went to the college, therefore, and delivered a speech to the students. He asked them not to be misled by what others said. He advised them to consult their teachers and parents in this matter. He also told them that they would have a new institution for imparting national education ifthere was any demand for it. The speech produced a good effect and made the students think seriously about the matter.

Mahatma Hans Raj was not content merely with criticism. He drew up schemes for a non-University High School as well as for a University for Women. Before many months had passed the D.A.V. College had three new departments. The first was the College of Divinity where Vedic missionaries were to be trained. The second was the Industrial High School. The third was the Institute of Industrial Chemistry. All these have been doing useful work for many years.

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

प्रथम पृष्ठ का शेष

दीपावली : त्यौहार भारत ....

जैसे कैडबरी चॉकलेट वाले सुबह उठते हों, गाय का दूध निकलते हों, फिर चूल्हे के पास बैठकर कडाही में खोया निकालते हों उसमें काजू बादाम पीसकर डालते हों, उसकी चाकलेट बनाकर हमारे पास लाते हों। इसी तरह पिज्जा वाले डोमिनोज को भी देखकर यही लगता होगा जबकि हकीकत ये है कि कम्पनी अपने यहाँ गायों को ताकतवर बनाने के लिए सूअर का मांस भी खिलाती हैं, उन्हें बूचडखानों में काटा जाता है और मांस को प्रोसेस करके सभी देशों ने बाई एयर भेजा जाता है ताकि सभी जगह स्वाद एक सामान रहे और लोग बोले यम्मी।

लेकिन भारत के लोगों को ये बात बहुत जल्दी समझ में आती है कि दूध और खोया में मिलावट है। लेकिन कैडबरी या अन्य उत्पाद में कितना केमिकल मिला है कोई नहीं जानता, कुरकुरे, पेप्सी में कितना जहर है, ये समझ में नहीं आता। क्योंकि न्यूज चैनल पैसा लेकर हिन्दू त्यौहारों पर मिलावट का इतना शोर मचा देते हैं कि घर की गाय और भैंस का दूध भी जहर दिखाई देने लगता है और विदेशी कम्पनियों का जहर अमृत।

जैसे ही त्यौहार पूरा होता है न कहीं नकली दूध की खबर आती है, न खोये की। जैसे दूधिया से लेकर मिलावट खोर तक सब इमानदार हो गये हों। क्या हम नहीं जानते कि एक हलवाई को अपनी दुकान की परवाह होती है, उसकी दुकान की इज्जत होती है, उनका नाम और सामान इन असली मिलावटखोर विदेशी कम्पनियों से कहीं अधिक शुद्ध होता है।

लेकिन दीपावली आने पर विभिन्न समाचार चैनलों पर एक युद्ध का शंखनाद कर दिया जाता है कि मिठाई न खायें, यह मिठाई जहरीली है, यह मिठाई अस्पताल पहुंचा देगी और दूसरी ओर विदेशी कंपनियों के उत्पादों के विज्ञापन की आवृति और तीव्रता बढ जाती है। इन दोनों को मिलाकर यदि विश्लेषण करें तो लगता है कि यह भारतीय उपभोक्ता को बरगलाने का प्रयास है, जिसमें एक ओर उसे भय दिखाया जाता है कि वो भारतीय बाजारों मे बनने वाली मिठाई को न खरीदें और दूसरी ओर विदेशी कम्पनियां इन्हीं चैनलों पर प्रचार कर उपभोक्ता के मन में पैदा किये गये भय को अपना सामान बेचने के लिये प्रयोग करते हैं। क्योंकि इन कंपनियों के उत्पाद स्वाद और मूल्य में भारतीय मिठाईयों के आगे कहीं नहीं ठहर सकते, अत: उपभोक्ता के मन में भय पैदा करने की रणनीति बना कर समाचार चैनलों को एक टूल के रूप में अपनी योजना में शामिल किया जाता है।

एक किस्म कहे तो अपने उत्पाद को बेचने के लिये भारतीय परंपरा में परिवार और प्रेम के बंधन का इस्तेमाल अपना माल बेचने के लिए कर रहे हैं। हमारी भावनाओं का पूरा फायदा उठाया जाता है, जैसे अभी तनिक्ष वाले ने किया था। इसके अलावा विदेशी कंपनियां जानती हैं कि जब पूरे विश्व मे कहीं भी उनका सामान न बिक रहा हो, तो भारत में कोई भी पर्व उत्सव आने पर लोग खरीदारी को टूट पड़ते हैं। भारतीय उपभोक्ता इस कुचक्र को नहीं समझ पाता परिणाम पहले छोटे व्यापारियों को और फिर उपभोक्ताओं को भी भुगतना पड़ने लगता है। किसान के दूध से लेकर हलवाई तक उसके पास काम करने वाले मजदूर तक की

रोजी-रोटी पर फर्क पड़ने लगता है। क्योंकि हमारी संस्कृति मे पूरा समाज एक दूसरे से अप्रत्यक्ष रूप से जुडा हुआ है, घर में मिटटी के दिए की जगह चाइना का लड़ी झालर, भोजन में पिज्जा या बर्गर। सोचिये हमारे त्यौहार कितने हमारे बचे हैं? हमारे त्यौहार में हमारा क्या है? सब कुछ तो विदेशी है, चाइना की लड़ी झालर, विदेशी ब्रांड के कपडे, घर में कैडबरी की चाकलेट है इसमें हमारा क्या है यानि बड़ी ही चालाकी से लोगों को अपनी ही रसोई, अपने ही बाजार और अपनी ही संस्कृति से काटने का काम हो रहा है।

उस पर ये पेटा जैसे संगठन हमारे हर त्यौहार पर डंडा लिए खड़े हो जाते हैं हमने होली भी आर्गेनिक कर ली और दीपावली भी, गणेश जी भी आर्गेनिक कर लिए और दशहरा भी, पटाखा बंद सब कुछ बंद हो गया। पर अब इनसे जाकर कोई ये पूछे कि बकरीद पर इन्हें सांप क्यों सूंघ जाता है? मासूम जानवरों का खून बहाने पर ये क्यों कुछ नहीं कहते? क्यों बकरीद को भी एनवायरनमेंट फ्रेंडली बनाने की सलाह नहीं देते? क्रिसमस पर टर्की नामक पक्षी को भूनकर खाने पर नहीं बोलते हैं और रेसकोर्स की घुड़दौड़ की अनदेखी करते हैं लेकिन रक्षा बंधन पर पक्षी नजर आने लगते है और दिवाली पर प्रदूषण और होली पर पानी। हो सकता है कुछ दिन बाद कहने लगे कि जिस नंदी बैल पर भगवान शिव विराजमान है ये भी पशु के ऊपर क्रूरता है। इसलिए वामपंथी नास्तिक और भारतीय संस्कृति के विरोधी लोगों की अपील, आंसू, ज्ञान पर मत जाइये। त्यौहार हमारे हैं, हम कोल्हू में बना गुड खाएं या घर में बनाई मिठाई। इस दिवाली विदेशी कम्पनियों के साथ नहीं अपनों के साथ मनाइए, झालर नहीं दिए जलाइए। खुशियाँ हमारी हैं अपने तरीके से मनाइए। - ***सम्पादक***

पृष्ठ 2 का शेष

विद्यार्थी जीवन की आवश्यक...

सभी वस्तुओं को यथा स्थान पर संजोना, जीवन में बहुत महत्व रखता है। अत: विद्यार्थी को अपना कार्य सुचारू रूप से परिपूर्ण करने के लिए अपने आपको सुव्यवस्थित करना अनिवार्य है।

अनुशासन : विद्यार्थी जीवन में अनुशासन महत्वपूर्ण है। अनुशासन न होने से विद्यार्थी के उदंड होने की सम्भावना रहती है। 13 वर्ष की अवस्था तक यदि अनुशासन में रखा जाए तो विद्यार्थी को उसके लक्ष्य से या तो सन्मार्ग से भटक जाने की संभावनाएं कम हो जाती हैं। किसी ने सही कहा है। 'spare the rod and spoil the child' जब एक बार प्रारम्भिक जीवन में अनुशासित हो गए तब फिर हम उसके आदि हो जाते हैं। वह हमारा स्वभाव बन जाता है और प्रत्येक कर्म को अनुशासन के दायरे में रहकर पूर्ण कर लेते हैं। अनुशासन की चार विशेषताएं हैं :-

- ⋆ मुस्कराते हुए आज्ञा पालन करना।
- ⋆ नि:संकोच कठोर परिश्रम करना।
- ⋆ समय का पालन करना।

विद्यार्थी को धार्मिक होना चाहिए तात्पर्य विनम्र, आज्ञाकारी, सहनशील, कर्मठ, व परिश्रमी होना चाहिए। अपने लक्ष्य की ओर सदैव अग्रसर रहें, मृदुभाषी, मितभाषी, हितैषी आदि गुणों से सम्पन्न होना ही धार्मिक होना है। क्योंकि **'विद्या धर्मेण शोभते'** विद्या से ही धर्म की शोभा होती है।

शोक समाचार

श्री सुरेश गोयल जी का निधन

आर्यसमाज शालीमार बाग, बी.एन. पूर्वी, दिल्ली के अधिकारी एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री सुरेश गोयल जी का दिनांक 27 अक्तूबर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 28 अक्तूबर को निगम बोध घाट पर दिल्ली सभा के सम्वर्धकों द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ यज्ञ एवं श्रद्धांजलि दिनांक 30 अक्तूबर को आर्यसमाज शालीमार बाग में सम्पन्न हुई।

श्री अमर मुनि जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के पूर्व मन्त्री एवं सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य श्री अमरमुनि जी (पूर्वनाम श्री अमर सिंह आर्य जी) का दिनांक 2 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 5 नवम्बर, 2020 को आर्यसमाज मन्नी का बड़, अलवर में सम्पन्न हुई।

श्री रमेश मल्होत्रा जी का निधन

आर्य पुस्तक बन्धनालय के संस्थापक श्री रमेश मल्होत्रा जी का 1 नवम्बर को निधन हो गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 3 नवम्बर, 2020 को आर्यसमाज आर्य नगर ग्रुप हाउसिंग सोसायटी पटपडगंज, दिल्ली में सम्पन्न हुई।

श्री विजय गुप्त जी का निधन

प्रख्यात लेखक, आर्यसमाज मदनगीर के संरक्षक एवं सुप्रसिद्ध आशु कवि श्री विजय गुप्त जी का 31 अक्तूबर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 10 नवम्बर को आर्यसमाज मदनगीर में आयोजित होगी।

श्री गुरुदत्त तिवारी जी का निधन

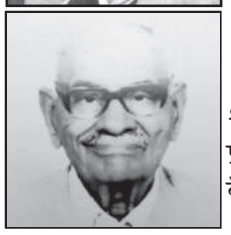

श्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के वरिष्ठ ट्रस्टी श्री गुरुदत्त तिवारी जी का दिनांक 29 अक्तूबर, 2020 को प्रात: 7:15 बजे निधन को गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया।

श्रीमती रविला गुप्ता जी का निधन

श्रीमद दयानन्द वेदार्ष महाविद्यालय, गुरुकुल गौतम नगर नई दिल्ली की अत्यन्त सहयोगी एवं ट्रस्ट की सदस्या श्रीमती रविला गुप्ता जी का दिनांक 30 अक्तूबर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ।

श्री रामदास अग्रवाल जी का निधन

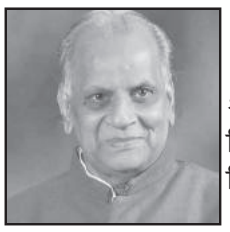

आर्ष गुरुकुल तुरंगा, रायगढ़ (छत्तीसगढ़) के संरक्षक श्री रामदास अग्रवाल जी का दिनांक 1 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

श्री आज्ञा राम शर्मा का निधन

आर्यसमाज हापुड, गाजियाबाद (उ.प्र.) के वरिष्ठ सदस्य श्री आज्ञा राम शर्मा जी का दिनांक 2 नवम्बर, 2020 को निधन हो गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 2 नवम्बर, 2020 से रविवार 8 नवम्बर, 2020

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 05-06/11/2020 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 04 अक्तूबर, 2020

आर्य संदेश टीवी चैनल

www.AryaSandeshTV.com

24 घंटे चलने वाला आपका अपना चैनल

प्रसारित होने वाले दैनिक कार्यक्रम

प्रात: 5:00 जागरण मन्त्र
प्रात: 5:05 शरण प्रभु की आओ रे
प्रात: 6:00 योग एवं स्वास्थ्य
प्रात: 6:30 संध्या
प्रात: 6:45 आओ ध्यान करें
प्रात: 7:00 दैनिक अग्निहोत्र
प्रात: 7:30 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (लाइव)
प्रात: 8:30 भजन बेला
प्रात: 9:00 श्री राम कथा
प्रात: 9:30 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
प्रात: 10:00 प्रवचन संग्रह
प्रात: 10:30 नव तरंग
प्रात: 11:00 प्रवचन माला
प्रात: 11:30 योग एवं स्वास्थ्य
अपरान्ह 12:00 श्री राम कथा
अपरान्ह 12:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
अपरान्ह 1:00 विशेष
अपरान्ह 2:00 आर्य मंच
अपरान्ह 2:30 भजन सरिता
अपरान्ह 3:00 प्रवचन माला
अपरान्ह 3:30 नव तरंग
सायं 4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव
सायं 5:00 योग एवं स्वास्थ्य
सायं 5:30 शरण प्रभु की आओ रे
सायं 6:00 सायंकालीन अग्निहोत्र
सायं 6:30 संध्या
सायं 6:45 आओ ध्यान करें
सायं 7:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
सायं 7:30 श्री राम कथा
सायं 8:00 भजन सरिता
सायं 8:30 भजन बेला
रात्रि 9:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 10:00 शयन मन्त्र
रात्रि 10:05 न्यूज बुलेटिन व भजन उत्सव
रात्रि 11:00 नव तरंग
रात्रि 11:30 प्रवचन माला
रात्रि 12:00 स्वामी देवव्रत प्रवचन
रात्रि 12:30 शरण प्रभु की आओ रे
रात्रि 1:00 विशेष
रात्रि 2:00 वैदिक विद्वानों के सान्निध्य में व्याख्यानमाला (पुन: प्रसारण)
रात्रि 3:00 आर्य मंच
रात्रि 3:30 स्वामी देवव्रत प्रवचन
प्रात:4:00 न्यूज बुलेटिन और भजन उत्सव

नोट : आपातकालीन स्थिति में उपरोक्त दैनिक कार्यक्रमों में परिवर्तन किए जा सकते हैं। - ***व्यवस्थापक***

प्रतिष्ठा में,

यज्ञ कुण्ड सैट प्राप्त करें

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली 2018 में 10,000 याज्ञिकों द्वारा एकरूप यज्ञ के विहंगम दृश्य आपने अवश्य देखा होगा। महासम्मेलन में प्रयुक्त किए गए यज्ञ कुण्ड सैट आपके परिवार, संस्था, समाज में प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा दैनिक यज्ञ प्रेमियों के लिए उपलब्ध।

मूल्य
मात्र 900/- रुपये

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें -
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा,
मो. 9540040339

देश और समाज विभाजन के
षड़यन्त्र का पर्दाफास

आओ! जानें मनुस्मृति का सच

स्वाध्याय के लिए प्रक्षेप रहित संस्करण

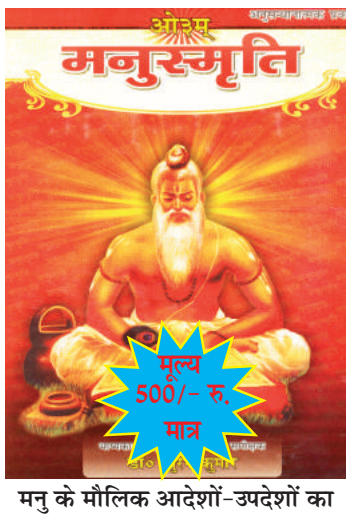

मनु के मौलिक आदेशों-उपदेशों का प्रसंगबद्ध वर्णन होने से स्वाध्यायशील महानुभावों के लिए परम उपयोगी।

मूल्य : ~~600~~/- 500/-

प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड,
नई दिल्ली-1, मो. 9540040339

खेद व्यक्त

खेद है कि प्रैस गड़बड़ी होने के कारण आर्यसन्देश साप्ताहिक का गत अंक 48 दिनांक 26 अक्तूबर से 1 नवम्बर, 2020 प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को हुई असुविधा के लिए खेद है। - *सम्पादक*

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह